गागर में सागर भरना

एक सद्गुरु का प्रेरणादायक सन्देश और एक सद्गुरु को

परमश्रद्धेय श्रीरामशरणजी महाराजजी,

आपका निमन्त्रण मुझे मिला। परन्तु अतीव दु:ख सहित ज्ञापित करती हूँ कि इसबार मैं आपके आश्रम में उपस्थित नहीं हो सकूँगी, उसके लिए क्षमा चाहती हूँ। यहाँ आश्रम में कुछ असुविधा हो गई है। दो जन अस्वस्थ हो गये हैं और दो जन कुछ दिनों के लिए अपने घर गये हैं। उस समय मेरे यहाँ न रहने से असुविधा हो जायेगी। हनुमान जयन्ती के उपलक्ष्य पर एक प्रवचन भेज रही हूँ, अच्छा लगे तो भक्तजनों को पढ़कर सुना दें। अगली गीता जयन्ती पर नवम्बर मे वहाँ जाने की इच्छा है। उस समय और भी कई जन यहाँ से मेरे साथ जा सकेंगे। मैंने बहुत सारी भक्त जनता के सम्मुख में कभी प्रवचन नहीं किया है और अपनी छोटी कोठरी से कहीं बाहर नहीं निकली हूँ। फिर आपकी हृद्यता, श्रद्धा और प्रीति मुझे आपकें आश्रम में जाने के लिए आकर्षित करती है।

श्रीश्रीमाँ के साथ श्रीश्रीरामशरण महाराजजी

–प्रणामान्त आप सबकी श्रीश्रीमाँ।

हिन्दी मे एक बात प्रचलित है "गागर में सागर भरना" अर्थात् कलश के मध्य सागर को भरना। महात्माओं का जीवन वृतान्त लिखना इसी प्रकार का ही एक कर्म है। समुद्र समान अनन्त चरित्र के सम्बन्ध में पृष्ठों के उपर पृष्ठ लिखने से भी मन में आता है कि कुछ भी नहीं लिखा गया है। कलश में समग्र समुद्र को नहीं भरा जा सकता है, फिर भी हम लिखते हैं। एक कलश समुद्र के पानी में समुद्र का हिल्लोल-कल्लोल कुछ भी नहीं रहता है, मगर वह पानी पवित्र होता है। उसी तरह महात्माओं के चरित्र-कथन अनुध्यान से हम सबका कल्याण होता हैं।

आज मैं सन्त तुलसीदास के जीवन की एक कहानी सुनाती हूँ –"तुलसीदासजी प्रत्यह भोर में शौचादि कर्म समाप्त कर एक पैर के नीचे जहाँ हस्त द्वारा मिट्टी को समान करते थे, उस स्थान पर एक गड्ढ़ा हो गया था। उस पैर के नीचे के स्थान पर एक प्रेतात्मा ने आश्रय ले लिया। वह उस गर्त में जमा हुआ पानी रोज पान करता था। एक बार तुलसीदासजी दो-चार दिन के लिए कहीं बाहर चले गये। उन दिनों में फिर प्रेत को पीने का पानी नहीं मिला। तुलसीदासजी के वापस आने पर, बहुत दिन के बाद प्रेतात्मा ने पानी पीकर तृप्त हो कर 'आ:' शब्द उच्चारित किया। वह शब्द सुनकर तुलसीदासजी चौंक उठे और पूछने लगे 'कौन है? कौन है?' प्रेत ने तुलसीदासजी को सब कुछ बता दिया! तुलसीदासजी बोलें "आपने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? तब मैं अन्यत्र नहीं जाता। अब कहिये, कैसे आपका उद्धार होगा?" प्रेत बोला "गया में जाकर मेरे लिए पिण्ड देना होगा। गया बहुत दूर हैं, क्या तुम जा सकोगे?" तुलसीदासजी कहते हैं "मुझे कोई असुविधा नहीं होगी। मैं जाऊँगा!" प्रेत बोला "मैं तुम्हे जिस पथ से ले जाऊँगा, तुम्हे उसी पथ से जाना होगा। जहाँ पर मैं तुम्हे रुकने को कहूँगा वहाँ तुम रुक जाओगे। इस बात से यदि तुम राजी हो तो चलो।" तुलसीदासजी राजी हो गये।

गया के नजदीक एक स्थान पर पहुँचने के बाद प्रेत तुलसीदासजी से बोला "तुम गया में जाकर पिण्डदान कर के यहाँ लौट आओ। प्रेत का तो गया धाम जाने का अधिकार नहीं हैं।" तुलसीदासजी प्रेत के कहे अनुसार वही कर्म करते हैं। पिण्डदान कर वापस आ कर प्रेत को उसी स्थान पर दण्डायमान रहते देखकर तुलसीदासजी कहते हैं "क्या आपका उद्धार नहीं हुआ?" प्रेत ने कहा, "हाँ, मेरा उद्धार हुआ हैं। यहाँ मैं इसलिए खड़ा हूँ क्योंकि तुमने मेरा इतना उपकार किया है और मैं चाहता हूँ कि मैं भी तुम्हारे लिए कुछ करुँ।" उसके बाद प्रेत तुलसीदासजी को कहता है तुम तो राम भक्त हो। काशी में दशाश्वमेध घाट पर रामायण पाठ होता है। देखना वहाँ एक कोने में कुष्ठरोगग्रस्त एक वृद्ध ब्राह्मण बैठकर पाठ श्रवण करता है। वह ही है हनुमान। तुम उसके पास जाओ।"

तुलसीदासजी काशी जाकर तथा उस स्थान पर उसी भाव में हनुमानजी का दर्शन पाते हैं। पाठ समाप्त होने के बाद जैसे ही हनुमानजी वहाँ से चले जाने को उठते है वैसे ही तुलसीदासजी जाकर हनुमानजी को एकदम आलिंगन कर बैठते हैं। हनुमानजी कहते हैं "क्या करते हो? मैं कुष्ठरोगी हूँ, मेरे शरीर से सब विषाक्त रक्त गिर रहा है।" तुलसीदासजी ने कही है, "ठाकुर, और चालाकी मत कीजिए। मैं जानता हूँ आप कौन हैं? प्रभु को मेरे बारे में पूछियेगा।" हनुमानजी उत्तर देते हैं तीन दिन बाद तुम यहाँ आओ। प्रभु का उत्तर तुम्हें दे दुँगा।" हनुमानजी वहाँ से चले जाते हैं। तीन दिन बाद तुलसीदासजी को कहते हैं – "प्रभु ने कहा है, वे आपको पहचानते हैं।"

देखिये तीन दिन बाद उन्हें उत्तर मिलता हैं। हनुमानजी के हृदय में ही राम विराजित हैं, अगर यूँही यदि तुलसीदासजी विश्वास करते तो तीन दिन उन्हें अपेक्षा नहीं करनी पड़ती। उत्तर उन्हें तभी मिल जाता। भक्त ही भगवान होता हैं। यह विश्वास जो किया होता तो उनका काम तभी बन जाता। जो विश्वास करता है वही सुखी है। और जो विश्वास नहीं करता वह कष्ट पाता है। भगवान के पथ पर जितना ही अग्रसर होगे, देखोगे कि विश्वास ही एकमात्र अवलम्बन है।

संकलन–सद्गुरु माता चरणाश्रिता
श्रीमती सुशीला सेठिया